ank-3_Copy of Layout 1 16/07/2024 1:58 PM Page 1

पाक्षिक
# स्वर्ण खबर

वर्ष:12 | अंक: 3 | पेज:4 | रुपये:10 swarnkhabar@gmail.com टोंक, मंगलवार, 16 से 31 जुलाई 2024 Mob.+91-9462549799 swarnkhabar.in.net

## ब्रीफ न्यूज

### धरती का श्रृंगार पौधरोपण कार्यक्रम

**टोंक।** जिला प्रमुख सरोज बंसल ने कृषि विभाग परिसर में पौध रोपण कार्यक्रम की शुरूआत करते हुए नीम का पौधा लगाया। इस अवसर पर सौ पौधे लगाए गए। बंसल ने पौधों को धरती का श्रृंगार बताते हुए पर्यावरण संरक्षण पर जोर दिया। कृषि विभाग ने पौधों को जीवित रखने के लिए 55 ट्री गार्ड और 2 हजार नीम पौधे प्रदान किए।

### भाजपा जिलाध्यक्ष ने किया कावड़ यात्रा पोस्टर का विमोचन

**टोंक।** भारतीय सनातन मंडल की प्रथम कावड़ यात्रा के लिए भाजपा जिलाध्यक्ष अजीत सिंह मेहता ने पोस्टर का विमोचन किया। यात्रा 25 जुलाई को राधा किशन मंदिर से भूतेश्वर महादेव मंदिर तक होगी।

### 19 अतिक्रमियों को नोटिस जारी

**टोंक।** जिला कलेक्टर डॉ. सौम्या झा के निर्देश पर नगर परिषद आयुक्त ममता नागर ने टोंक शहर में नाले पर हो रहे अतिक्रमण, अवैध निर्माण, मुख्य एवं आम रास्तों के अतिक्रमण पर सोमवार को कार्यवाही की। नगर परिषद की टीम द्वारा कार्यवाही करते हुए 19 अतिक्रमियों को मौके पर नोटिस जारी किए गए। साथ ही, आमजन को अतिक्रमण एवं अवैध निर्माण नहीं करने की समझाइश भी की गई। इस दौरान राजस्व अधिकारी राजपाल बुनकर समेत नगर परिषद के अन्य कार्मिक मौजूद रहे।

## एक पौधा बाबा के नाम हर घर के सामने होगा बिल्व पत्र का पौधा

# पर्यावरण और शिव भक्ति का अनूठा संगम

-स्वर्ण खबर नेटवर्क-

**टोंक।** धार्मिक आस्था और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक अद्वितीय पहल करते हुए बजाज नगर के दो दंपत्तियों, विनोद-रीना पहाड़िया और ऋषिराज-शिमला चौधरी ने हर घर के सामने बिल्व पत्र का वृक्ष लगाने का संकल्प लिया है। इस मुहीम की शुरूआत द्वारिका नगरी में स्थित श्री स्वर्ण दुर्गा कैलाशपति मंदिर से की गई है, जहां सबसे पहले बिल्व पत्र के पौधे लगाए गए।

इस प्रेरणादायक पहल का मुख्य स्त्रोत शिव महापुराण है। श्रावण मास को देखते हुए इन दोनों दंपत्तियों ने बिल्व पत्र के पौधे लगाने का निश्चय किया है। रीना पहाड़िया का कहना है, "भोले बाबा की कृपा से हर घर के सामने बिल्व पत्र का पौधा अवश्य लगेगा। इस मुहिम में कॉलोनी के बहुत से शिव भक्त भी हमारे साथ आ गए हैं।"

विनोद पहाड़िया ने बताया, "हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी माँ के नाम पौधा लगाने का जिक्र किया। इसी तर्ज पर हमने भी जगत के पिता भोलेनाथ और मां पार्वती के नाम बिल्व पत्र का पौधा लगाने का निर्णय लिया है।"

ऋषिराज चौधरी का कहना है, "पहले शिव जी को चढ़ाने के लिए बिल्व पत्र मिलते ही नहीं थे, लेकिन जब से प्रदीप जी मिश्रा द्वारा शिव महापुराण की कथा सुनाई गई तभी से बिल्व पत्र के पेड़ भी दिखने लगे हैं। यह सब शिव जी की कृपा से संभव हुआ है।"

शिमला चौधरी ने अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा, "एक बिल्व पत्र ने मुझे मौत के मुँह से बाहर निकाल दिया। समय लगा लेकिन जहां जीने की आस भी नहीं थी, वहां बाबा को बिल्व पत्र चढ़ाने से बीमारी ठीक हो गई।"

इस पहल में कॉलोनी के कई शिव भक्त भी जुड़ गए हैं और मिलकर इसे आगे बढ़ा रहे हैं। गत दिनों स्वर्ण दुर्गा मंदिर के बगीचे में 1100 बिल्व पत्र लाए गए। इस दौरान सभी ने बिल्व पत्र लगाने का संकल्प लिया और लोगों में बिल्व पत्र के पौधों का वितरण किया गया। साथ ही उन्हें शपथ दिलाई गई कि वे पौधों को अपने बच्चों की तरह पालेंगे।

इस मुहीम में विनोद पहाड़िया, रीना पहाड़िया, ऋषिराज चौधरी, शिमला चौधरी, दीपिका चौधरी,रमेश यादव आशा यादव, खुशबू, रोशन, रामप्यारी, राजाराम गौत्तम, सावित्री शर्मा, धन्नालाल मीणा, संतरा मीणा, संतरा सैनी, अतुला तम्बोली, सरिता चौधरी, मेघराज मीणा, राहुल शर्मा, जुली शर्मा, धीरेन्द्र शर्मा, रामेश्वर मीणा, और शिव सैन,गोपाल सैनी, पूजा, सुनीता, विमला बाई, सीमा नायक, सीमा पहाड़िया, मनीषा, सुनीता काला सहित अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहे।

## प्रिय अभिभावकों

### बच्चों के विकास में संघर्ष की भूमिका

## नंबरों की दौड़ या व्यवहारिक ज्ञान?

**प्रिय अभिभावकों**

अच्छी शिक्षा हम सभी देना चाहते हैं, लेकिन अच्छी शिक्षा की परिभाषा क्या है? क्या यह केवल अंकों की दौड़ है या फिर व्यवहारिक ज्ञान? हमें नहीं पता कि हमारे बच्चे क्या पढ़ रहे हैं, क्या सोच रहे हैं और क्या समझ रहे हैं। आज के समय में बच्चों और माता-पिता के बीच की दूरी को कम करना सबसे बड़ी जरूरत बन गई है। बच्चों को अच्छी परवरिश देने के हमारे नजरिए को बदलने की आवश्यकता है। हम अक्सर अच्छी परवरिश और लक्जरी में फर्क नहीं कर पाते। नतीजतन, हमारे घर की महिलाएं भी कामकाजी हो रही हैं। यह बुरा नहीं है, लेकिन समस्या तब होती है जब हम अपने बच्चों की हर इच्छा को आसानी से पूरी कर देते हैं। इससे बच्चों में यह सोच विकसित हो जाती है कि सब कुछ बहुत आसान है, और उन्हें संघर्ष करना नहीं आता। हम अपने बच्चों को हर सुविधा देते हैं, यही हमारे प्यार का पैमाना बन गया है, चाहे वह मोबाइल हो या स्कूल नहीं जाना। छोटे-छोटे बच्चे खेलने की उम्र में ही गलत आदतें सीख रहे हैं। उन्हें दादी-नानी की कहानियों में कोई रुचि नहीं है। उनके दिमाग पर गाड़ियों का नशा, अच्छी ड्रेस, फैशन और मेकअप का नशा चढ़ रहा है। हद तब हो जाती है जब 12-13 साल के बच्चे ऐसे अपराध कर बैठते हैं, जिनकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। ऐसे में मैं सभी पेरेंट्स और टीचर्स से कहना चाहूंगी कि अपनी जिम्मेदारी निभाएं। बच्चों को आपके साथ और विश्वास की जरूरत है। उन्हें प्यार और आत्मविश्वास दें। जब वे आपसे हर बात साझा करेंगे, तो बड़ी गलती करने से पहले ही रुक जाएंगे। अपने बच्चों को संघर्ष करना सिखाएं, उन्हें अपनी जिम्मेदारी लेना सिखाएं।

**कामिनी श्रीवास्तव**
**प्रधानाचार्या, सन शइन ग्लोबल सी. सै. स्कूल, टोंक**

एक बार एक बच्चा तितली को कोकून से निकलते हुए देख रहा था। उसे उस पर दया आई और उसने कोकून को तोड़ दिया। तितली को आजादी तो मिल गई, लेकिन जान चली गई। बच्चा बहुत अचंभित था। जब उसने अपने टीचर से पूछा कि तितली मर क्यों गई, तो टीचर ने बताया कि इसका संघर्ष ही इसे जीना सिखाता है। संघर्ष से इसमें साहस और ताकत आती है। इसे जल्दी एक नए वातावरण में छोड़ने से उसकी मृत्यु हो गई। इसलिए, बच्चों को संघर्ष करना सिखाएं। उन्हें जिम्मेदारी और आत्मनिर्भरता का पाठ पढ़ाएं।

# कोचिंग संस्थानों पर नियंत्रण की मांग, निजी शिक्षण संस्थाओं ने उठाई आवाज

-स्वर्ण खबर नेटवर्क-

**टोंक।** केंद्र सरकार द्वारा जारी कोचिंग एवं ट्यूशन सेंटर की नई गाइडलाइन के अनुसार, अब सभी संस्थानों को जिला प्रशासन द्वारा गठित जिला स्तरीय समिति में रजिस्टर करवाना अनिवार्य होगा। इसके अलावा, कोचिंग संस्थान 16 साल से कम आयु के बच्चों को प्रवेश नहीं दे सकेंगे। इस नई गाइडलाइन के अनुपालन के लिए सोमवार को मदरलैण्ड चिल्ड्रन स्कूल में निजी विद्यालयों के संगठन स्कूल शिक्षा परिवार द्वारा एक प्रेस वार्ता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संघ के जिलाध्यक्ष शब्बीर नागौरी ने कहा कि कोचिंग संस्थानों के बढ़ते मक्कड़जाल ने बच्चों के भविष्य को जकड़ रखा है। 16 साल से कम उम्र के बच्चों को स्कूलों से दूर कर ये संस्थान उनके बचपन को छीन रहे हैं और भ्रामक विज्ञापनों से अभिभावकों को गुमराह कर रहे हैं।

संघ के महामंत्री एडवोकेट विशाल श्रीवास्तव ने बताया कि नई गाइडलाइन के अनुसार, कोचिंग और ट्यूशन सेंटर का रजिस्ट्रेशन जरूरी होगा। उन्हें भवन सुरक्षा प्रमाण पत्र, फायर सेफ्टी सर्टिफिकेट, और अपनी वेबसाइट पर सभी सूचनाएं डालनी होंगी। साथ ही, बच्चों की मानसिक स्थिति संतुलित रखने के लिए वेलनेस टीचर और साइकैट्रिस्ट को भी नियुक्त करना पड़ेगा। ये संस्थान स्कूल समय में संचालित नहीं किए जा सकेंगे। इस अवसर पर स्कूल शिक्षा परिवार के जिलाध्यक्ष शब्बीर नागौरी, जिला प्रभारी कमलेश सिंगोदिया, जिला संयोजक विशाल श्रीवास्तव, कोषाध्यक्ष राजीव पाल यादव, रमेश काला, गोरधन हिरोनी, यूसुफ ऐजाजी, रामकिशन नायक, शिवदयाल यादव, सलीम मियां, फजल रहमान, मुरली शर्मा, खालिद एहतेशाम, मालचंद, रामपाल यादव, गिरधर सिंह, शंकर चौधरी, प्रेमचंद, हिमांशु आदि मौजूद थे। संघ ने जिला कलेक्टर को ज्ञापन देकर इन गाइडलाइन्स की अनुपालना सुनिश्चित करने के लिए जिला स्तरीय समिति गठित करवाने की मांग की है।

## शिक्षकों ने पर्यावरण संरक्षण का लिया संकल्प

# 101 पौधे लगाकर हरित भविष्य की दिशा में बढ़ाया कदम

-स्वर्ण खबर नेटवर्क-

**टोंक।** शहर के सन शाइन ग्लोबल सीनियर सेकेंडरी स्कूल के शिक्षकों ने पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दिखाते हुए 101 पौधे लगाए। इस पहल का उद्देश्य न केवल हरियाली बढ़ाना है, बल्कि पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाना भी है।

इस अवसर पर शिक्षकों ने पर्यावरण संरक्षण के महत्व पर चर्चा की और पौधारोपण की आवश्यकता पर जोर दिया। वहीं स्कूल निदेशक विशाल श्रीवास्तव ने कहा कि, "ज्यादा पौधारोपण करना हमारा लक्ष्य है, लेकिन उससे भी बड़ा टास्क हमारे लिए हमारे द्वारा लगाए हुए पौधों को पालना है। हम संकल्प लेते हैं कि जिन पौधों को हम लगाएंगे, उन्हें हम सजगता से पालेंगे।"

प्रधानाचार्या, कामिनी श्रीवास्तव ने कहा, "पौधारोपण हमारे स्वस्थ जीवन के लिए अतिआवश्यक है। हमें पौधे लगाने के साथ-साथ पौधों को अपने बच्चों की तरह पालना होगा, तब जाकर हरित राजस्थान का सपना साकार होगा।"

इस दौरान, विभिन्न प्रकार के पौधे लगाए गए, जिनमें फूलदार और छायादार वृक्ष शामिल थे। शिक्षको ने स्कूल के खेल मैदान मे पौधे लगाये और उसकी देखभाल करने का संकल्प लिया। उन्होंने यह भी कहा कि वे नियमित रूप से इन पौधों की देखभाल करेंगे, उन्हें पानी देंगे और उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करेंगे। इस पहल से न केवल स्कूल का वातावरण हराभरा होगा, बल्कि शहर में भी हरियाली बढ़ेगी।

इस मौके पर विशाल शर्मा, अंजना जैन, मीनाक्षी जैन, रीना खंडेलवाल, अंजू साहू, सतीश सोनी, कविता चौहान, शंकर चौहान, अनिल, उगन्ता यादव, ऐमन खान, वजीदा तबस्सुम, आयुषी सक्सेना, उर्वशी विजयवर्गीय, असरा, राफिया, टीना योगी, योगेश सैनी, सतीश बैरवा, कान सिंह नरूका मौजूद रहे।

# ग्रामीण पृष्ठभूमि से निकलकर चिकित्सा क्षेत्र में छाप छोड़ने वाले नायक की प्रेरक कहानी...

## टोंक के हैल्थ हीरो डॉ. सुरेन्द्र अग्रवाल ने पत्नि डॉ.सुषमा अग्रवाल और टीम के सपोर्ट सें अग्रवाल हॉस्पिटल कों बनाया नम्बर वन

-पीयूष गौत्तम-

-स्वर्ण खबर नेटवर्क-

**टोंक।** "लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती, कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।" ये पंक्तियां टोंक जिले के एक ऐसे शख्स पर सटीक बैठती हैं, जिन्होंने ग्रामीण परिवेश में पले-बढ़े मध्यमवर्गीय परिवार के होते हुए भी अपने जुनून और कोशिशों से सफलता की ऊंचाइयों को छुआ है। डॉ. सुरेन्द्र अग्रवाल, जिनका नाम टोंक जिले और आसपास के इलाकों में हर तरह की बीमारियों से निजात दिलाने के लिए जाना जाता है, इनके परिचय से कोई शख्स अन्जान नहीं है। वे 24 घंटे लोगों की सेवा में तत्पर रहते हैं। एक छोटी कपड़े की दुकान और 25 सदस्य के संयुक्त परिवार में में पले-बढ़े डॉ. सुरेन्द्र अग्रवाल की कहानी संघर्षों से भरी हुई है। आज वे न केवल अग्रवाल हॉस्पिटल के मालिक हैं, बल्कि यहां के सबसे प्रतिष्ठित डॉक्टरों में भी गिने जाते हैं। आइए, जानते हैं उनके संघर्षों और सफलता की इस प्रेरणादायक कहानी को, जो हमें यह सिखाती है कि कोशिश और जुनून से हर मुकाम हासिल किया जा सकता है।

**आपकी स्कूलिंग कहाँ से हुई?**

मैं टोंक जिले के टोडारायसिंह का रहने वाला हूँ। मेरी पढ़ाई सरकारी स्कूल से हुई। मैंने 19 साल की उम्र में 12वीं पास की।

**12वीं के बाद आपने क्या किया?**

12वीं के बाद मैंने एक साल कोटा में कोचिंग की और पीएमटी का एग्जाम दिया। पहले प्रयास में ही पीएमटी में सेलेक्ट हो गया।

**ग्रेजुएशन कहाँ से किया?**

मेरा ग्रेजुएशन मेडिकल कॉलेज अजमेर से हुआ।

**पोस्ट-ग्रेजुएशन कैसे किया?**

ग्रेजुएशन के बाद, पहले प्रयास में ही प्री-पीजी फाइट करके मेडिकल कॉलेज अजमेर से एमडी जनरल मेडिसिन में पास किया।

**इस दौरान आपका स्ट्रगल कैसा रहा?**

मेरी स्कूलिंग गांव के सरकारी स्कूल से हुई। परिवार की आर्थिक स्थिति लोअर मिडिल क्लास थी, और एक छोटी कपड़े की दुकान थी। संयुक्त परिवार में 25 सदस्य थे, गांव में पढ़ाई का माहौल नहीं था। व्यापारियों के बच्चों की छुट्टियां दुकान पर बैठने के लिए होती थीं, लेकिन मेरे पिताजी ने पढ़ाई का समर्थन किया। हमारे गांव से 25 साल बाद कोई डॉक्टर बना था। अस्पतालों में डॉक्टरों को देखकर मन में बड़ा सम्मान था और डॉक्टर बनने की इच्छा थी। लेकिन गांव में कोचिंग और बेहतर पढ़ाई के संसाधनों की कमी थी, लेकिन मेरे दोस्त डॉक्टर प्रदीप जैन के साथ हमने कोचिंग जॉइन की। हमने मिलकर ठान लिया कि पढ़ाई करनी है और संघर्ष करके इसे पूरा किया।

**उस वक्त के नीट और आज के नीट में क्या फर्क समझते हैं?**

पहले और आज के नीट में बहुत फर्क है। अब परीक्षा की कठिनाई और प्रतिस्पर्धा दोनों बढ़ गई हैं।

**(शेष पृष्ठ 3 पर)**

ank-3_Copy of Layout 1 16/07/2024 1:58 PM Page 2



## नेता की कुर्सी और कर्मचारी की कुंडली

# सम्पादकीय...

राजस्थान की धरती पर सरकारी कर्मचारियों का जलवा इस कदर है कि आम जनता इन्हें 'सरकारी भगवान' से कम नहीं मानती। मगर, यह भगवान चढ़ावे के नाम पर सीधे-साधे भक्तों से प्रसाद में रिश्वत मांगते हैं। भई, जनता की सेवा का धर्म छोड़कर ये अपने निजी स्वार्थ की पूजा में इस तरह मग्न हैं कि इन्हें आमजन की आवाजें सुनाई ही नहीं देतीं। इनके कान सिर्फ नोटों की खनक सुनने के लिए बने हैं, बाकी सब तो इन्हें संगीत ही लगता है।

रिश्वत मांगने की इनकी कला ऐसी निखरी है कि अच्छे-अच्छे कलाकार भी शरमा जाएं। फाइलें बिना 'चाय-पानी' के ऐसे रेंगती हैं जैसे बिना ईंधन के गाड़ी। और बिना 'पानी पिलाए' तो काम ऐसा ठप होता है जैसे कोई पुराना काठ का दरवाजा। क्या यही वो राजस्थान है जिसे हम कभी आदर्श प्रशासनिक ढांचे का प्रतीक मानते थे? अब तो ये कर्मचारी जनता की समस्याओं को ऐसे नजरअंदाज करते हैं जैसे किसी पुराने अखबार के रद्दी पन्ने को। सरकारी दफ्तरों के बाहर लंबी कतारें और लोगों के चेहरे पर चिंता और निराशा का भाव, यह सब अब हमारे लिए नया नहीं रहा। हर दिन, यह सरकारी भगवान नई-नई तकनीकों से जनता की जेब काटने के लिए तैयार रहते हैं। सुबह का अखबार खुलते ही इनके मन में एक ही ख्याल आता है, आज किस बहाने से जनता को लूटूं? समाज के ये ठेकेदार भूल जाते हैं कि वे जनता के सेवक हैं, मालिक नहीं। अगर समय रहते इनकी मनमानी पर लगाम नहीं लगाई गई, तो जनता का विश्वास ऐसे टूट जाएगा जैसे कांच का टुकड़ा। सरकारी कर्मचारी यह न भूलें कि कुर्सी पर बैठकर जनता का शोषण करना एक दिन उनके लिए भी महंगा साबित हो सकता है। जनता जागरूक हो रही है और अब सहनशीलता की सीमा समाप्त हो चुकी है। सरकार और प्रशासन को चाहिए कि ऐसे कर्मचारियों पर सख्त कार्रवाई करें, ताकि आमजन का विश्वास बहाल हो सके और न्याय की गुहार पूरी हो सके।

सोचिए, एक दिन आप सरकारी दफ्तर में जाते हैं और वहां के कर्मचारी आपको देखकर मुस्कुराते हुए कहते हैं, ह्लआइए, जनाब! कैसे मदद कर सकते हैं?ह्व आप हैरान होकर पूछते हैं, ह्लक्या हुआ, साहब? आज बिना रिश्वत के काम हो जाएगा?ह्व और वह कर्मचारी उत्तर देता है, ह्लबिल्कुल, जनाब! हमने सुधार का पाठ पढ़ लिया है।ह्व क्या यह सपना कभी सच हो सकता है? अगर सरकार ने समय रहते इन भगवानों की तिजोरियों पर ताला नहीं लगाया, तो जनता का विश्वास ऐसे टूट जाएगा जैसे एक कच्ची दीवार बारिश में ढह जाती है। और जब तक ऐसा नहीं होता, तब तक सरकारी दफ्तरों के बाहर लंबी कतारें और जनता की निराशा भरी निगाहें हमारी रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा बनी रहेंगी। यह वक्त है जब सरकार को अपने इन सरकारी भगवानों को असली सेवा का मतलब समझाना होगा, नहीं तो वो दिन दूर नहीं जब जनता इन भगवानों को उनके ही मंदिरों से बाहर निकाल फेंकेगी।

# गैर कानूनी शिक्षण संस्थाएँः शिक्षा के नाम पर धोखाधड़ी का कारोबार...!

राजस्थान में शिक्षा का स्तर सुधारने के बजाय, कुछ लोग इसे अपनी जेबें भरने का साधन बना चुके हैं। गैर कानूनी तरीके से चल रही शिक्षण संस्थाएँ आजकल इतनी बढ़ गई हैं कि अगर इनके पास सर्टिफिकेट बनवाने का लाइसेंस होता, तो ये भी बेच डालते। शिक्षा के मंदिर कहे जाने वाले ये संस्थान, असल में शिक्षा के नाम पर धोखाधड़ी का अड्डा बन चुके हैं। जब आप इन संस्थानों की ओर रुख करते हैं, तो ऐसा महसूस होता है जैसे किसी अज्ञात भूमि पर पहुँच गए हों, जहाँ किसी नियम-कायदे का कोई अस्तित्व ही नहीं है। ये संस्थान कागजों में तो बड़े-बड़े दावे करते हैं, लेकिन हकीकत में इनके पास न तो योग्य शिक्षक हैं, न ही उचित सुविधाएँ। छात्रों को सिर्फ सपनों की दुनिया में खोया हुआ रखा जाता है, जबकि हकीकत कुछ और ही होती है।

इन संस्थानों की सबसे बड़ी विशेषता है, इनका प्रवेश प्रक्रिया। यहाँ दाखिला लेने के लिए न तो कोई प्रवेश परीक्षा होती है और न ही कोई मेरिट। बस, जेब में पर्याप्त नकदी होनी चाहिए। इसके बाद चाहे आपका बच्चा पढ़ाई में कैसा भी हो, उसे दाखिला मिल जाएगा। फीस का आलम ऐसा है कि सुनकर लगता है जैसे ये कोई पांच सितारा होटल हो, न कि शिक्षण संस्थान। शिक्षा के नाम पर ये संस्थान सिर्फ बच्चों का समय और अभिभावकों का पैसा बर्बाद कर रहे हैं। पाठ्यक्रम की बात करें तो यहाँ सिर्फ नाम मात्र का ही शिक्षण होता है। बच्चों को कोचिंग सेंटर की तरह सिर्फ परीक्षा पास करने के लिए तैयार किया जाता है। न कोई नैतिक शिक्षा, न कोई व्यक्तित्व विकास। आखिरकार, शिक्षा का मतलब सिर्फ सर्टिफिकेट हासिल करना थोड़े ही है!

इन संस्थानों के संचालन में प्रशासन की मिलीभगत भी किसी से छिपी नहीं है। हर महीने एक नई "जाँच कमेटी" बनती है, जो सिर्फ चाय और बिस्किट के साथ अपना काम निपटा देती है। आखिरकार, इन गैर कानूनी संस्थाओं को चलाने के लिए भी तो किसी की छत्रछाया की जरूरत होती है।

समाज के हर वर्ग को इन गैर कानूनी शिक्षण संस्थानों से सावधान रहने की जरूरत है। अगर हम सच में अपने बच्चों का भविष्य उज्ज्वल बनाना चाहते हैं, तो हमें इन धोखेबाज संस्थानों के खिलाफ आवाज उठानी होगी। शिक्षा एक पवित्र कार्य है, और इसे ऐसे व्यापारियों के हाथ में नहीं सौंपा जा सकता, जो केवल अपने लाभ के लिए काम कर रहे हैं। समय आ गया है कि हम इनकी पोल खोलें और सही शिक्षा को बढ़ावा दें, ताकि आने वाली पीढ़ी को एक उज्जवल भविष्य मिल सके।

# हरा भरा राजस्थानः शिक्षा विभाग का अनूठा प्रयास...पर्यावरण और बच्चे

हमारा देश भारत कई सारी विविधताओं से भरा देश है।इस वर्ष की हम बात करें तो गर्मी क मौसम के शुरूआती दिनों में धरती का तापमान 47-48 डिग्री से अधिक पहुंच गया था। यदि हम सब ऐसे है अंधाधुन पेड़ों की कटाई करते रहे, तो एक दिन तापमान को 50 डिग्री से अधिक जाने में देर नहीं लगेगी और उस स्थिति में मानव का जीवन संकट में पड़ जाएगा। इसलिए राजस्थान शिक्षा विभाग ने माननीय शिक्षा मंत्री श्रीमान मदन दिलावर जी के नेतृत्व में हरा भरा राजस्थान, विकसित राजस्थान इसके लिए राज्य के हर सरकारी विद्यालय में पढ़ने वाले 1 से 5 तक के बच्चों से एक पेड़ लगवाने व कक्षा 6-8 में अध्ययनरत बच्चों से अपने परिवार के सदस्यों की संख्या के बराबर पौधे लगाने का अभियान चलाया जा रहा है। इसके लिए व्यापक स्तर पर प्रत्येक जिले में एक कमेठी जिला कलेक्टर महोदय द्वारा मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, जिला वन अधिकारी, मुख्य कार्यकारी अधिकारी के नेतृत्व में गठित कर कार्य योजना बनाई गई है। सभी विद्यालयों द्वारा गड्ढे खुदवा कर पुरी तैयारी कर ली गई। साथ यह पौधे विद्यालय मैदान,अपने घर,खेत,मंदिर, पार्क, धर्मशाला आदि में कई भी सार्वजनिक व निजी स्थानों पर लगाए जा सकते है।राजस्थान को हरा भरा करना व बच्चों में पर्यावरण के प्रति जागृति लाना। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है।बच्चे मन के सच्चे होते है। पेड़ लगाने के साथ-साथ उसकी देखभाल की जिम्मेदारी भी बच्चों को दी जाएगी। जब तक वह पौधा बड़ा पेड़ नहीं बन जाए। उनको उसकी देखभाल करनी होगी।

इस तरह के अभियान अब हमें वृहद स्तर पर चलाने होगें क्योंकि अब पानी सर के ऊपर से निकल गया है। हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी ने भी मां के नाम पर एक पेड़ अभियान की शुरूआत की है। सभी देशवासियों से आग्रह किया गया है कि सब अपनी मां के नाम एक पेड़ लगाकर उसकी सार संभाल करके उसे बडा करें। यही बात अब हर व्यक्ति को समझनी पड़ेगी क्योंकि हिंदू धर्म में अग्नि दाह संस्कार को पवित्र माना जाता है। हर व्यक्ति का अपना अंतिम संस्कार लकड़ी से करने के लिए 5 क्विंटल लकड़ी की आवश्यकता पड़ती है। यह सोचकर भी हमें कम से कम अपने जीवन में एक पौधा तो जरूर लगाना ही चाहिए।पेड़ है तो ही जीवन है। पेड़ों के बिना धरती का तापमान गर्मी की ऋतु में हमारा जीना दूभर कर देगा। इसलिए आओ हम सब मिलकर पेड़ लगाए क्योंकि पेड़ है तो कल है।

**हंसराज हंस (टोंक)**

# प्रशासन की नाकामी और प्रकृति की चेतावनी

गत दिनों तेज बारिश के चलते मालपुरा क्षेत्र में आई बाढ़ ने कई गांवों को तबाह कर दिया, लेकिन भीपुर गांव की स्थिति सबसे अधिक भयावह रही। यहां के सभी कच्चे मकान मलबे में बदल गए, जिससे लोगों का जीवन अस्त-व्यस्त हो गया। उनका सारा आटा-पानी बह गया, जिससे खाने के लाले पड़ गए। प्रशासन की तरफ से कुछ कर्मचारी मदद के लिए पहुंचे और अपनी तनख्वाह में से लोगों की मदद की, जो निश्चित रूप से मानवता का उत्कृष्ट उदाहरण है। लेकिन सवाल यह उठता है कि प्रशासन की चूक कहां हुई?

मौसम विभाग ने पहले ही अलर्ट जारी किया था और कलेक्टर ने टीमों का गठन भी किया था, लेकिन इसके बावजूद इस तबाही को रोका नहीं जा सका। यह प्रशासन की तैयारियों और उनकी कार्यक्षमता पर गंभीर सवाल खड़े करता है। इसके साथ ही, हमें पेड़ों की अंधाधुंध कटाई पर भी रोक लगानी चाहिए। पेड़ प्रकृति के संतुलन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पेड़ न केवल बाढ़ और मिट्टी के कटाव को रोकते हैं, बल्कि जलवायु को भी संतुलित रखते हैं। हमें पेड़ काटने के बजाय उन्हें पालने और संवारने की सीख लेनी चाहिए।

इस बाढ़ ने हमें चेतावनी दी है कि हमें प्रकृति के साथ खिलवाड़ नहीं करना चाहिए। हमें पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक होना होगा और प्रशासन को भी अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन सही तरीके से करना होगा। तभी हम आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित और सुंदर भविष्य बना पाएंगे। आइए, हम सब मिलकर पेड़ लगाएं, पर्यावरण की रक्षा करें और प्रशासन को भी इस दिशा में जागरूक करें ताकि ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो।

## राष्ट्रीय मंच पर चमकाया जिले का नाम

# एनसीसी कैडेट्स की शानदार उपलब्धियां

-स्वर्ण खबर नेटवर्क-

**टोंक।** प्रथम राज बटालियन एनसीसी जयपुर द्वारा भवानी निकेतन पी. जी. कॉलेज जयपुर में आयोजित वार्षिक प्रशिक्षण कैंप के अंतिम दो चरणों में राजकीय महाविद्यालय टोंक के एनसीसी ए. एन. ओ. मोहम्मद बाकिर हुसैन के नेतृत्व में कैडेट्स ने भाग लिया। इस कैंप में कैडेट्स को आपदा प्रबंधन, समय प्रबंधन, व्यक्तित्व विकास, लीडरशिप, अनुशासन, टीम भावना, ड्रिल, फील्ड क्राफ्ट, बैटल क्राफ्ट एवं कई अन्य सैन्य रणनीतियां सिखाई गईं। महाविद्यालय के कैडेट्स ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए सोलो डांस, ड्रिल टेस्ट, पायलट एवं टी एस सी प्रतियोगिताओं में पहला स्थान हासिल किया। कैंप कमांडेंट कर्नल जितेंद्र सिंह ने विजेता कैडेट्स को मेडल देकर सम्मानित किया। कैडेट अनुष्का साहू ने डांस प्रतियोगिता में, राहुल चोपड़ा ने टी एस सी में स्वर्ण पदक जीता। तृतीय चरण में सीनियर कैडेट दीपेंद्र सिंह शेखावत एवं अजय चौधरी की लीडरशिप में कैडेट्स ने संयुक्त रूप से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर एनसीसी ड्रिल टेस्ट प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। पायलट प्रतियोगिता में संजना यादव और माया गुर्जर ने पहला स्थान प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त, तेलंगाना में आयोजित ई बी एस बी शिविर में आयुष ने हिस्सा लेकर रस्साकशी और वॉलीबॉल में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। महाविद्यालय के लिए यह गर्व का विषय है कि पिछले छह वर्षों में सोलह कैडेट्स का थल सेना भर्ती एवं विभिन्न राजकीय सेवाओं में चयन हुआ है। प्राचार्य प्रोफेसर लोकेश कुमार शर्मा ने सभी कैडेट्स को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की और ए. एन. ओ. मोहम्मद बाकिर हुसैन की सराहना करते हुए कहा कि यह उनके अथक प्रयासों का परिणाम है कि एनसीसी कैडेट्स निरंतर सफलता प्राप्त कर रहे हैं। महाविद्यालय के कैडेट्स राज्य और देश में आयोजित शिविरों में भाग लेकर जिले और महाविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं।

## दादागिरी करते ठेकेदार, बेपरवाह प्रशासन कर रहा है आमजन की शिकायतों की अनदेखी

# ठेकेदार की मनमानी से परेशान सिद्धार्थ नगर के लोग

-स्वर्ण खबर नेटवर्क-

**टोंक।** शहर के सिद्धार्थ नगर सहित आसपास की कॉलोनियों के लोगों की परेशानियां थमने का नाम नहीं ले रही हैं। पहले से ही पक्की सड़कों की कमी से जूझ रहे इस इलाके के लोगों ने अपने स्तर पर झीगरा डालकर कच्ची सड़कों का निर्माण किया था। लेकिन अब सीवरेज डालने वाले ठेकेदार की मनमानी से उनकी मेहनत पर पानी फिर गया है। ठेकेदार ने सीवरेज लाइन डालने के नाम पर सभी कच्ची सड़कों को बुरी तरह से तोड़ दिया, जिससे बारिश के कारण अब इलाके में कीचड़ का साम्राज्य हो गया है। ऐसे में स्थानीय निवासियों के लिए घर से बाहर निकलना भी मुसीबत बन गया है।

नागरिकों ने नगर परिषद की शिवानी मेडम से संपर्क किया, जो इस क्षेत्र पर नियंत्रण का दावा करती हैं। लेकिन शिवानी मेडम ने ठेकेदार को निर्देश देने के बावजूद यह स्वीकार किया कि ठेकेदार उनकी बात नहीं सुनता। जब निवासियों ने आगे शिकायत करने की बात की, तो शिवानी मेडम ने निराशाजनक प्रतिक्रिया दी, "आगे शिकायत करने से क्या होगा?"

इस प्रशासनिक उदासीनता से परेशान सिद्धार्थ नगर के लोग अब सवाल कर रहे हैं कि वे अपनी समस्याओं के समाधान के लिए किसके पास जाएं। जब प्रशासनिक तंत्र ही उनकी समस्याओं का समाधान नहीं कर पा रहा है, तो आमजन की विवशता का अंदाजा आसानी से लगाया जा सकता है। स्थानीय निवासियों का कहना है कि प्रशासनिक अधिकारी और ठेकेदार की इस मनमानी के खिलाफ अगर जल्द ही कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया, तो वे आंदोलन करने के लिए मजबूर होंगे। उनका कहना है कि जब प्रशासन ही उनकी सुनवाई नहीं कर रहा है, तो उन्हें अपनी आवाज बुलंद करने के लिए सड़कों पर उतरना पड़ेगा।

# ग्रामीण पृष्ठभूमि से निकलकर चिकित्सा क्षेत्र...

(पृष्ठ 1 का शेष)

***सफलता के लिए क्या सलाह देंगे?***

मेहनत के बिना सफलता नहीं मिलती, लेकिन मेहनत कभी बेकार नहीं जाती। मेहनत आपकी जिंदगी में कहीं न कहीं काम आती है। असफलता से घबराएं नहीं; यह एक मौका हो सकता है। अपने परिवार के लिए खुद को महत्व दें और छोटी-छोटी विफलताओं के लिए आत्महत्या की सोच न रखें। जीवन में ढेर सारी संभावनाएं होती हैं। एक विफलता के बाद भी नए अवसर मिल सकते हैं, जैसे कि यूपीएससी एग्जैम या अन्य। याद रखें, विफलता जीवन का हिस्सा है, और इससे घबराकर जीवन खत्म करना सही नहीं है।

**आपकी लाइफ में कभी ऐसा पल आया जब आपको लगा कि अब नहीं हो पाएगा?**

हाँ, कई बार ऐसे पल आए हैं जब सब कुछ ठीक होने के बावजूद परिस्थितियाँ आपके हाथ में नहीं होतीं। जब परेशानी बढ़ जाती है, तो मेरा मानना है कि धैर्य बनाए रखना चाहिए और खुद पर नियंत्रण रखना चाहिए।

**मोटिवेशन की जरूरत महसूस होने पर आप किसके पास जाते थे?**

मेरे पास कोई पर्टिकुलर गुरु नहीं थे, लेकिन जब मुश्किलें आती थीं, तो मैं धैर्य रखता और समय को महत्व देता। मुझे लगता है कि समय के साथ चीजें ठीक हो जाती हैं। अगर आपने ईमानदारी से काम किया है और गलत नहीं किया है, तो समय और धैर्य से समस्याएँ हल होती हैं।

**अग्रवाल हॉस्पिटल की शुरूआत कैसे हुई?**

मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मैं टोंक में हॉस्पिटल खोलूंगा। 2005 में एमडी करने के बाद, मैंने कुछ समय निजी क्षेत्र में काम किया, जैसे कुचामन और नागौर में। एक साल काम करने के बाद, मुझे लगा कि अपने लोगों के बीच आना चाहिए। उस समय टोंक में निजी क्षेत्र का कोई हॉस्पिटल नहीं था, और सरकारी हॉस्पिटल में भी सीमित संसाधन थे। मैंने सोचा कि अपने लोगों के बीच आकर सेवा करनी चाहिए। जब टोंक आया, तो यहां कोई हॉस्पिटल नहीं था, इसलिए मैंने सोचा कि यहां काम शुरू करना चाहिए। यह एक बड़ा रिस्की डिसीजन था। मेरी धर्मपत्नी, डॉ. सुषमा अग्रवाल, जो गाइनकोलॉजिस्ट हैं, और मैं दोनों ने गवर्नमेंट जॉब की जगह टोंक में अपना हॉस्पिटल खोलने का निर्णय लिया। हम एक छोटे रेजिडेंशियल मकान को किराए पर लेकर पूर्ण रूप से वर्किंग हॉस्पिटल की शुरूआत की।

**2007 में आरपीएससी में आपका किस पोस्ट में चयन हुआ, और उसकी कहानी क्या थी?**

2007 में आरपीएससी मेडिकल ऑफिसर के लिए सेलेक्ट हुआ। एमडी करने के बाद, आरपीएससी की वेकेंसी के लिए इंटरव्यू दिया। हालांकि, मैंने गवर्नमेंट जॉब जॉइन नहीं किया और कई रिमाइंडर के बावजूद जॉइनिंग नहीं की। इस निर्णय पर शुरूआत में अफसोस हुआ और परिवार से दबाव भी था, लेकिन मुझे लगता है कि यह रिस्क लेना सही था। आज इस फैसले ने मुझे एक अलग मुकाम पर पहुंचा दिया है। भविष्य में अक्सर हमें ऐसे निर्णय लेने होते हैं जो बाद में हमारे लिए अच्छे साबित होते हैं।

**आप उस समय की पढ़ाई को और आज के समय की पढ़ाई को किस नजरिए से देखते हैं?**

पूर्व में भी प्रतियोगिता कठिन थी, लाखों बच्चे परीक्षा देते थे। तब राजस्थान में पीएमटी के लिए साढ़े 500 सीटें थीं। पढ़ाई की प्रक्रिया थोड़ी अलग थी; 10वीं और 12वीं के बोर्ड की तैयारी के बाद पीएमटी की तैयारी होती थी।

आजकल, बच्चों को कक्षा 6 से ही नीट की तैयारी शुरू करवा दी जाती है, जिससे उनका बचपन प्रभावित हो रहा है। मेरी राय है कि बच्चों को 10वीं कक्षा तक इन प्रतियोगी परीक्षाओं से दूर रखना चाहिए और उनके मानसिक और शारीरिक विकास पर ध्यान देना चाहिए। बचपन का अनुभव और विकास भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

**अग्रवाल हॉस्पिटल में किस तरह की सुविधाएं हैं?**

2007 में मैंने एक छोटे हॉस्पिटल से शुरूआत की, जब सरकारी अस्पतालों में सीमित संसाधन और डॉक्टर्स की कमी थी। हमने शुरू से ही प्रयास किया कि हमारे हॉस्पिटल में अच्छी सुविधाएं हों। पिछले 16 साल में, हमने 30,000 से अधिक डेलिवरी की हैं। 2010 में हमने पार्क प्लाजा में नई बिल्डिंग बनवाई और 2011 में जिले का पहला सीटी स्कैन शुरू किया। सीटी स्कैन की सुविधा से मरीजों को जयपुर रेफर करने की आवश्यकता कम हो गई। यह सुविधा इमरजेंसी केसों में तुरंत निदान और सही इलाज की सुविधा प्रदान करती है, जिससे मरीजों को समय पर उचित उपचार मिल पाता है। हमने हमेशा यह कोशिश की है कि मरीजों को उच्च गुणवत्ता की मेडिकल सेवाएं उपलब्ध कराई जाएं, ताकि उन्हें बाहर रेफर करने की जरूरत न पड़े।

**आज के समय में अग्रवाल हॉस्पिटल में कौन-कौन सी सुविधाएं उपलब्ध हैं?**

डायलीसिस यूनिट 2015-16 में, हमने डायलीसिस की बढ़ती मांग को देखते हुए एक डायलीसिस यूनिट शुरू की। जिले में किडनी मरीजों की संख्या बढ़ रही थी, और पहले मरीजों को हर दूसरे दिन जयपुर जाकर डायलीसिस करानी पड़ती थी। हमारी यूनिट ने मरीजों को जयपुर जाने से मुक्त किया, जिससे वे घर से इलाज के लिए आ सकते हैं और जल्दी वापस जा सकते हैं।

सुविधाओं की उपलब्धता डायलीसिस यूनिट ने मरीजों को मानसिक और शारीरिक राहत प्रदान की है। अब उन्हें इलाज के लिए जयपुर की यात्रा पर समय और पैसे खर्च करने की जरूरत नहीं है। इसके अलावा, ट्रांसपोर्टेशन और रुकने का खर्चा भी बच जाता है, जिससे मरीजों का मनोबल और वित्तीय दबाव दोनों कम होते हैं। हमारा लक्ष्य हमेशा यह रहा है कि मरीजों को उच्च गुणवत्ता की चिकित्सा सेवाएं स्थानीय स्तर पर उपलब्ध कराई जाएं, ताकि उन्हें बाहर की जगह पर निर्भर न रहना पड़े।

**अग्रवाल हॉस्पिटल में कौन-कौन से विशेषज्ञ डॉक्टर हैं और किस प्रकार की सेवाएं उपलब्ध हैं?**

हम 2010-11 से लेप्रोस्कोपिक (दूरबीन) सर्जरी का अभ्यास कर रहे हैं, जिसमें यूरोलॉजी, प्रॉस्टेट और किडनी स्टोन जैसी समस्याओं की सर्जरी शामिल है। हाल ही में हमने ब्लड बैंक शुरू किया है, जिसमें प्लेटलेट्स और प्लाज्मा की सुविधा भी उपलब्ध है, विशेषकर डेंग्यु मरीजों के लिए। साथ ही इमरजेंसी कार्डियक केयर प्रदान की जाती है, जिसमें एंजियोग्राफी और अन्य कार्डियक इमरजेंसी सेवाएं शामिल हैं।

*सुविधाएँ*

लेप्रोस्कोपिक सर्जरी सभी प्रकार की लेप्रोस्कोपिक सर्जरी, जिसमें यूरोलॉजी और गेस्ट्रोइंटेस्टाइनल सर्जरी शामिल है। ब्लड बैंक ब्लड ट्रांसफ्यूजन, प्लेटलेट्स, और प्लाज्मा की उपलब्धता, विशेषकर आपातकालीन स्थितियों में।

कार्डियक इमरजेंसी त्वरित कार्डियक देखभाल, जिसमें एंजियोग्राफी और इमरजेंसी कार्डियक ट्रीटमेंट शामिल है। हमारा हॉस्पिटल लगातार नए उपकरण और सेवाएं जोड़कर अपनी सुविधाओं को अपडेट करता रहता है, ताकि मरीजों को स्थानीय स्तर पर ही उच्च गुणवत्ता की चिकित्सा सेवाएं मिल सकें।

**आपका पहला केस कैसा था और उस अनुभव को आप कैसे देखते हैं?**

2007 में हॉस्पिटल की शुरूआत के समय, पहले केस की विशिष्टता मुझे याद नहीं है, लेकिन वह निश्चित रूप से चुनौतीपूर्ण था। शुरूआत में, हमने अपनी पूरी मेहनत और लगन से काम किया, और धीरे-धीरे लोगों ने हमारे ऊपर विश्वास करना शुरू किया।

*मेहनत और समर्पण*

शुरूआत में, हर केस को लेकर उत्साही और समर्पित रहना पड़ा। यही कारण है कि आज हमारे पास इतनी सकारात्मक फीडबैक और विश्वास है।

2015-16 के बाद, सरकारी स्वास्थ्य बीमा योजनाओं ने चिकित्सा क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव लाया। गरीब और बीपीएल कार्ड होल्डर्स को भी निजी क्षेत्र में मुफ्त इलाज मिलने लगा। 2019 के बाद, चिरंजीवी योजना ने भी स्थिति में सुधार किया, जिससे अधिक लोगों को सुलभ और गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सुविधाएं प्राप्त हो रही हैं। इन योजनाओं के चलते, पहले की तरह अब मरीजों को पैसे की कमी के कारण इलाज से वंचित नहीं रहना पड़ता। इससे हमारे क्षेत्र में भी चिकित्सा सेवाओं की पहुंच और गुणवत्ता में काफी सुधार हुआ है।

*दवाइयों के बारे में*

दवाइयों की उपलब्धता और गुणवत्ता पर ध्यान देना अत्यंत महत्वपूर्ण है। समय के साथ दवाइयों के क्षेत्र में भी काफी बदलाव आया है, और हमें नवीनतम दवाइयों और उपचारों को अपने अस्पताल में लागू करने की पूरी कोशिश करनी चाहिए। यह सुनिश्चित करना कि मरीजों को उचित और प्रभावी दवाएं मिलें, उनकी स्वस्थ होने की प्रक्रिया को तेजी से सुधारने में मदद करता है।

**लोग बिना डॉक्टर के प्रिस्क्रिप्शन के दवाइयां ले लेते हैं, जिससे उनकी स्वास्थ्य स्थिति बिगड़ जाती है। इस बारे में आप क्या कहना चाहेंगे?**

अक्सर देखा जाता है कि लोग बिना डॉक्टर की सलाह के दवाइयां लेते हैं, जिससे गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। कई बार अनट्रेंड मेडिकल पर्सन्स दवाइयों का गलत उपयोग करते हैं या दवाओं के साइड इफेक्ट्स को नहीं समझते हैं। इससे किडनी फेल्योर, हड्डियों की समस्या, ऑटोइम्यून डिजीज, और अन्य गंभीर समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं।

**मुख्य बिंदुः**

1. दवाइयों का सही उपयोगः दवाइयों की सही डोज और उनके साइड इफेक्ट्स को समझे बिना उनका उपयोग न करें। अनट्रेंड व्यक्ति से सलाह लेने से स्वास्थ्य को नुकसान हो सकता है।
2. मेडिकल कंसल्टेशनः किसी भी स्वास्थ्य समस्या के लिए योग्य डॉक्टर या मेडिकल एक्सपर्ट से परामर्श लें। यही सही तरीका है इलाज प्राप्त करने का।
3. कोविड-19 का उदाहरणः कोविड महामारी के दौरान, हमारे पास ऑक्सीजन प्लांट था जो बहुत उपयोगी साबित हुआ। कई गंभीर मामलों में, जब मरीजों को अन्य स्थानों पर इलाज नहीं मिल रहा था, हमने अपने संसाधनों और विश्वास के आधार पर उनकी मदद की। सही चिकित्सा परामर्श और इलाज की महत्वपूर्णता को समझना और इसका पालन करना सभी के स्वास्थ्य के लिए अनिवार्य है।

मुझे गर्व है कि कोविड के समय में, हमने अपनी सीमाओं के बावजूद भी मरीजों को समय पर इलाज और आवश्यक चिकित्सा सुविधाएं प्रदान कीं। कई गंभीर मामलों में, हमने बिना बेड के भी मरीजों का इलाज किया और उन्हें बचाया। स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता और मरीजों के प्रति विश्वास हमारी प्राथमिकता है, और इस तरह के अनुभव हमें अपने पेशे की जिम्मेदारी और महत्व को और भी अच्छे तरीके से समझने में मदद करते हैं।

***पूरा साक्षात्कार देखने के लिए स्वर्ण खबर यूट्यूब चैनल पर जाएं।***

ank-3_Copy of Layout 1 16/07/2024 1:58 PM Page 3



# WSDP WRITING SKILL DEVLOPMENT PROGRAM
## WITH SUN SHINE GLOBAL SENIOR SECONDRY SCHOOL

# "मोबाइल एक अभिशाप"

### मोबाइल का सीमित और नियंत्रित उपयोग जरूरी है

मोबाइल फोन का अत्यधिक उपयोग कई स्वास्थ्य और सामाजिक समस्याओं का कारण बन सकता है। इससे आंखों की रोशनी पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है और बच्चे पढ़ाई

पर ध्यान नहीं दे पाते। गाड़ी चलाते समय मोबाइल का उपयोग सड़क दुर्घटनाओं का खतरा बढ़ाता है। बच्चों का मोबाइल पर गेम खेलना और होमवर्क करना उनकी पढ़ाई और शारीरिक गतिविधियों को प्रभावित करता है। परिवार के सदस्यों से दूरी और सामाजिक रिश्तों पर भी इसका बुरा असर होता है। व्यक्तिगत जानकारी लीक होने से सुरक्षा संबंधी समस्याएं उत्पन्न होती हैं। ऑनलाइन शॉपिंग के कारण बाजार और दुकानों पर खरीदी कम हो रही है।

*भव्या मित्तल कक्षा 5*

### विवेकपूर्ण उपयोग से स्वास्थ्य और शिक्षा की सुरक्षा...

मोबाइल फोन, जो एक उपयोगी उपकरण था, अब समस्याओं का कारण बन गया है। इसका अत्यधिक उपयोग पढ़ाई में ध्यान भटकाता है और स्वास्थ्य पर बुरा असर डालता है। लंबे

समय तक उपयोग से आँखों के नीचे काले घेरे और धोखाधड़ी के संदेश मिलते हैं, जिससे आर्थिक नुकसान और सुरक्षा चिंताएँ उत्पन्न होती हैं। विद्यार्थियों की पढ़ाई में ध्यान कम हो जाता है और शैक्षणिक प्रगति प्रभावित होती है। मोबाइल फोन का अत्यधिक उपयोग मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाता है। इसलिए, इसका विवेकपूर्ण उपयोग आवश्यक है ताकि दुष्परिणामों से बचा जा सके और सही लाभ उठाया जा सके।

*वान्या विजय कक्षा 6*

### सावधानीपूर्वक करें मोबाइल फोन का इस्तेमाल...!

मोबाइल फोन का अत्यधिक उपयोग कई समस्याओं का कारण बन सकता है। इससे महत्वपूर्ण समय और धन की बबार्दी होती है और ध्यान भटकता है। साइबर ठगी, जिसमें

व्यक्तिगत जानकारी चोरी हो सकती है, भी इसका एक कारण है। मोबाइल का अधिक उपयोग पढ़ाई के समय को प्रभावित करता है और परिवार से दूरी उत्पन्न करता है। यह स्वास्थ्य समस्याओं, जैसे नींद की कमी, का कारण बन सकता है। सड़क दुर्घटनाओं का भी यह एक मुख्य कारण है क्योंकि ड्राइविंग के दौरान ध्यान भटकता है। इसलिए, मोबाइल फोन का सीमित और सावधानीपूर्वक उपयोग आवश्यक है ताकि इसके दुष्परिणामों से बचा जा सके।

*आराध्या चौहान कक्षा 6*

### मोबाइल फोनः जरूरत या नकारात्मक प्रभाव?

मोबाइल फोन आज सभी के जीवन का अहम हिस्सा बन गया है, जिससे हम विचार-विमर्श, फोटो-वीडियो साझा करना, और ऑनलाइन सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं। लेकिन

इसका अत्यधिक उपयोग स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है, जैसे आंखों की समस्याएं, मानसिक रोग, कैंसर, और ब्रेन ट्यूमर। बच्चों के बीच सामाजिक संपर्क कम हो सकता है, वे गलत जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, और पढ़ाई में कमजोरी हो सकती है। देर रात तक मोबाइल उपयोग से ध्यानाकर्षण शक्ति प्रभावित होती है। इसलिए, हमें मोबाइल का समझदारी से उपयोग करना चाहिए ताकि इसके दुष्प्रभावों को कम किया जा सके।

*स्वास्तिका सैनी कक्षा 7*

### अब मोबाइल पर ही भोजन

**बच्चों से लेकर बड़ों तक, सब शामिल!**

मोबाइल फोन ने जीवन को सुविधाजनक बनाया है, लेकिन इसका अत्यधिक उपयोग स्वास्थ्य और सामाजिक जीवन पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। बच्चे और बड़े,

खाना खाते समय भी मोबाइल देखते हैं। यह आदत मानसिक तनाव, ध्यान की कमी, और आंखों की समस्याओं का कारण बन सकती है। मोबाइल फोन की लत नींद की गुणवत्ता और कार्यक्षमता को प्रभावित करती है। नेटवर्क के विस्तार से पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। परिवारिक समय की गुणवत्ता भी कम हो जाती है। इसलिए, मोबाइल का विवेकपूर्ण और सीमित उपयोग आवश्यक है, ताकि दुष्परिणामों से बचा जा सके ।

*नाबिया कक्षा 8*

### विवेकपूर्ण उपयोग से स्वास्थ्य और शिक्षा की सुरक्षा...

मोबाइल फोन लाभकारी होते हुए भी कई हानियाँ उत्पन्न कर सकते हैं। अवरक्त तरंगे और रेडिएशन कान की मुलायम तंत्रिकाओं को नुकसान पहुंचा सकती हैं, जिससे सुनने

की क्षमता प्रभावित होती है और लंबे समय में बहरापन का कारण बन सकता है। मोबाइल का अत्यधिक उपयोग चर्म रोग, चिड़चिड़ापन, और क्रोध उत्पन्न कर सकता है। यह व्यसन का रूप ले सकता है, जिससे व्यक्ति सामाजिक जीवन से कट जाता है और परिजनों व दोस्तों के लिए समय नहीं निकाल पाता। छोटे बच्चों को मोबाइल देने से उनकी स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं क्योंकि उनकी त्वचा और तंत्रिकाएं अधिक संवेदनशील होती हैं।

*मंतशा कक्षा 8*

### "मोबाइल का करोगे दुरुपयोग, तो समस्याएँ खड़ी होगी हर रोज"

"मोबाइल का करोगे दुरुपयोग, तो समस्याएँ खड़ी होगी हर रोज"। मोबाइल फोन सही तरीके से उपयोग न होने पर अनेक समस्याओं

का कारण बन सकता है। लोग अपना बहुमूल्य समय मोबाइल देखने में बर्बाद करते हैं, जिससे स्वास्थ्य समस्याएं, जैसे ट्यूमर और कैंसर हो सकती हैं। वाहन चलाते समय इसका उपयोग सड़क दुर्घटनाओं का कारण बन सकता है। यह शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर भी नकारात्मक प्रभाव डालता है, जिससे शारीरिक विकास में बाधा और पढ़ाई में ध्यान की कमी होती है। युवा वर्ग विशेषकर इससे प्रभावित होते हैं। इसलिए, मोबाइल का संतुलित और विवेकपूर्ण उपयोग आवश्यक है।

*तिलक राज सैनी कक्षा 9*

### मोबाइल का सही उपयोग, सुरक्षा और संतुलन की जिम्मेदारी...

मोबाइल फोन आजकल के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है, लेकिन इसका सही उपयोग जरूरी है। इसे सही तरीके से न

इस्तेमाल करने पर कई समस्याएं हो सकती हैं। व्यक्तिगत और वित्तीय जानकारी की सुरक्षा बनाए रखना आवश्यक है और प्राइवेट जानकारी साझा नहीं करनी चाहिए। लंबे समय तक मोबाइल फोन के इस्तेमाल से मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है, जिससे नींद की गुणवत्ता प्रभावित होती है। सोशल मीडिया पर अनुचित सामग्री शेयर करने से सामाजिक जीवन भी प्रभावित हो सकता है। इसलिए, मोबाइल फोन का जिम्मेदारीपूर्वक उपयोग करना चाहिए ।

*रजत पहाड़िया कक्षा 9*

### मोबाइल फोन का सीमित उपयोग ही है सुरक्षित!

मोबाइल फोन ने दुनिया को नया रूप दिया है और यह हमारे जीवन का अहम हिस्सा बन गया है। यह त्वरित संचार से लेकर बिजली

का बिल जमा करना और बैंकिंग सेवाओं तक को आसान बनाता है। हालांकि, मोबाइल का अत्यधिक उपयोग समस्याएं पैदा कर सकता है। युवा वर्ग और बच्चे अक्सर मोबाइल में इतना खो जाते हैं कि उनका समय बर्बाद होता है और पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे पाते। इससे मानसिक स्वास्थ्य और आंखों की रोशनी पर नकारात्मक असर पड़ता है। मोबाइल का दुरुपयोग अपराधों की वृद्धि का कारण भी बन सकता है। मोबाइल फोन का सीमित और सावधानीपूर्वक उपयोग करे

*नैतिक सैनी कक्षा 10*

### लाभ और हानि की दोधारी तलवार है मोबाइल!

मोबाइल फोन के कई लाभ हैं, लेकिन इसके हानिकारक प्रभाव भी हैं। शोध के अनुसार, मोबाइल फोन से निकलने वाली रेडियो तरंगें

स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचा सकती हैं, जैसे कानों की कमजोरी और मस्तिष्क में चिढ़चिढ़ापन। अत्यधिक उपयोग से पढ़ाई कमजोर हो सकती है, और मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। मोबाइल की लत 'नोमोफोबिया' का खतरा बढ़ा सकती है, और परिवार के साथ समय की गुणवत्ता घट सकती है। ऑनलाइन खरीदारी पर्यावरण को प्रभावित कर रही है। आसान लेन-देन ने इसे जीवन का अहम हिस्सा बना दिया है। उपयोगकर्ता की जिम्मेदारी है

*तनिमा वैष्णव कक्षा 11 (विज्ञान वर्ग)*

### मोबाइल के संतुलित उपयोग से लाभ, अति से हानि

मोबाइल फोन आजकल एक महत्वपूर्ण उपकरण है, लेकिन इसके अत्यधिक उपयोग से मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव

पड़ सकता है। अत्यधिक निर्भरता से ध्यान की कमी, दिमागी क्षमता में कमी, और स्वास्थ्य समस्याएं जैसे हार्ट कैंसर और दृष्टि कमजोर होना हो सकता है। मोबाइल फोन का समय की बबार्दी और उत्पादकता पर नकारात्मक असर होता है। लोग अक्सर व्यर्थ के कार्यों में समय बर्बाद करते हैं, जिससे महत्वपूर्ण काम प्रभावित होते हैं। इसलिए, मोबाइल फोन का संतुलित और विवेकपूर्ण उपयोग करना आवश्यक है ताकि इसके लाभों का सही से फायदा उठाया जा सके और दुष्परिणामों से बचा जा सके।

*अक्षरा यादव कक्षा 11*

### स्वस्थ जीवन हेतु समझदारी से करें मोबाइल का उपयोग

मोबाइल फोन आजकल जीवन का अहम हिस्सा बन चुका है, जो कई काम मिनटों में पूरा कर देता है और पढ़ाई के लिए वरदान

साबित होता है। हालांकि, इसके अत्यधिक उपयोग से स्वास्थ्य समस्याएं जैसे सिर में दर्द, हार्ट अटैक, और बहरेपन हो सकते हैं। मोबाइल फोन की हानिकारक किरणें आंखों को नुकसान पहुंचाती हैं, और इसका अत्यधिक उपयोग बच्चों पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। यह केवल मनुष्यों नहीं, बल्कि पक्षियों पर भी असर डालता है। मोबाइल का संतुलित और समझदारीपूर्ण उपयोग जरूरी है, विशेष रूप से सोते समय और सुबह उठते ही इसका उपयोग न करने की सलाह दी जाती है।

*तनिषा यादव कक्षा 11*

# ऑनलाइन गेम खेलने की बढ़ती लत, टेंशन में परिवार

कुछ वर्षों पहले जब इंटरनेट की इतनी उपलब्धता नहीं थी, बच्चे पाकों में जाकर दोस्तों के साथ आउटडोर गेम खेला करते थे। जिससे उनका शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहता था, लेकिन धीरे- धीर इंटरनेट सस्ता हो गया और कई ऑनलाइन गेम्स और उनकी ऐप्स आ जाने से बच्चों का रुझान आउटडोर और इनडोर मेमों से हटकर इन वर्चुअली गेमों की ओर बढ़ गया।

हमारे देश में बच्चों, किशोरों और युवाओं में ऑनलाइन गेम खेलने की प्रवृत्ति अब इस कदर बढ़ती जा रही है कि ये एक महामारी का रूप लेती जा रही है। इसके शिकार लोग चौबीसों घंटे बिना रुके ऑनलाइन गेम खेलना पसंद करते हैं। भारत में 23 वर्ष तक के 88 प्रतिशत युवा समय बिताने के लिए ऑनलाइन गेम खेलते हैं। शौक के लिए या समय बिताने के लिए कुछ देर को ऑनलाइन गेम खेलना कोई बुरी बात नहीं है, लेकिन समस्या तो तब पैदा होती है जब ये एक एक बुरी आदत बन जाती है, जिसे गेमिंग एडिक्शन कहते हैं। यह समस्या आज भारत के हर राज्य, हर शहर में फैलती जा रही है और करोड़ों मां- बाप अपने बच्चों की इस लत से बहुत परेशान हैं। ऑनलाइन गेम्स खेलने से हिंसा की प्रवृत्ति भी बढ़ रही है ये गेम अक्सर हिंसक घटनाओं से भरे होते हैं। ऑनलाइन गेम की दुनिया ही बिल्कुल अलग है उसमें मरने मारने की बातें होती हैं। यह गेम बच्चों और युवाओं में हिंसक प्रवृति को बढ़ा रहे हैं। लॉक डाउन के बाद से भारत में ऑनलाइन गेम खेलने वालों की संख्या में लगातार वृद्धि हुई है, इसमें बच्चों के साथ-साथ बड़े भी शामिल हैं। वर्ष 2018 में भारत में ऑनलाइन गेम्स खेलने वाले करीब 26 करोड़ 90 लाख , वर्ष 2020 में ये संख्या बढ़कर करीब 36 करोड़ 50 लाख हो गई। अनुमान है कि वर्ष 2022 में लगभग 55 करोड़ से ज्यादा की आबादी यानी लगभग आधी आबादी ऑनलाइन गेम्स खेलने में व्यस्त है। भारत के लोग अब 1 दिन में औसतन 218 मिनट ऑनलाइन गेम खेलते हुए बिता रहे हैं। पहले यह औसत 151 मिनट था। वर्ष 2020 में जब पहली बार लॉकडाउन लगा था, तब इसके शुरूआती कुछ महीनों मे भारत में 700 करोड़ से ज्यादा बार ऑनलाइन गेम्स अलग- अलग डिजिटल डिवाइस पर इनस्टॉल किए गए थे। बच्चे, किशोर और युवा सभी आउटडोर गेम्स और इनडोर गेम्स खेलना छोड़कर, ऑनलाइन गेम्स में व्यस्त हो गए हैं। जीतने की होड़ में बच्चे लगातार डिवाइस से चिपके रहते हैं और इस खेल में कई घंटों बीत जाते हैं,पता तक नहीं चलता, यहीं से शुरू होता है गेमिंग एडिक्शन। पिछले साल ब्रिटेन में हुए एक सर्वे में हम सब में से एक बच्चे ने माना था कि गेम खेलने के लिए उन्होंने माता पिता का पैसा चोरी किया है इसके लिए ज्यादातर बच्चों ने अपने माता पिता के डेबिट या क्रेडिट कार्ड का उन्हें बिना इजाजत इस्तेमाल किया था। यहीं से बच्चों में चोरी की बुरी आदत पड़नी शुरू हो जाती है और धीर धीरे करके ये उनके चरित्र और भविष्य को चौपट कर है। कुछ ऑनलाइन गेम्स फ्री होते हैं, कुछ में पैसा देना होता है। बच्चे अगला स्टेप पार करने के लिए अभिभावकों की जमा पूंजी से चोरी करते हैं। कई गेम्स जीतने पर रि-वॉर्ड भी मिलता है, इससे लालच बढ़ता जाता है। हार जाने पर हुआ पैसा वापस पाने की जिद होती है। बच्चे लगातार झूठ बोलने और लोन लेने जैसी आदतों के गेम्स जरूरत से ज्यादा खेलने से बच्चों के मन मस्तिष्क पर बहुत बुरा असर पड़ता है, वे चिड़चिड़े और हिंसक बन रहे हैं। दुनिया भर में 15 प्रतिशत गेमर्स इसकी लत के शिकार हो जाते हैं और मानसिक तौर पर बीमार हो जाते हैं। इस बीमारी के कुछ लक्षण होते हैं, जिन्हें समय पर पहचान लेना बहुत जरूरी है जैसे, गेम के अलावा हर काम से खुद को अलग कर लेना, भूख कम हो जाना, आंखों और कलाइयों में दर्द होना, सिर में दर्द, नींद कम आना, गेम नही खेल पर चिड़चिड़ापन आदि।

आज हर हाथ में मोबाइल है, इसका परिणाम यह हुआ है कि सभी मोबाइल की छोटी स्क्रीन पर वर्चुअल वर्ल्ड में ही खोए रहना चाहते हैं और बाहरी दुनिया से वे कटे रहते हैं। इंटरनेट आज बच्चों में अवसाद पैदा कर रहा है।

# सावन में शिव महिम्न स्त्रोत से पुत्र प्राप्ति की महिमा

सावन माह में भगवान शिव की प्रसन्नता के लिए शिव स्तुति और स्त्रोत का पाठ करने का विशेष महत्व है। इन स्त्रोतों में शिव महिम्न स्त्रोत सबसे प्रभावी माना जाता है। इस स्त्रोत का पूरा पाठ शुभ फल देने वाला है, साथ ही यह देव स्त्रोत कामना विशेष की पूर्ति के लिए निश्चित फल देने वाला होता है। शिव महिम्न स्त्रोत के कई प्रयोगों में से एक प्रमुख प्रयोग है झ पुत्र प्राप्ति प्रयोग। पुत्र की प्राप्ति दांपत्य जीवन का सबसे बड़ा सुख माना जाता है। इसलिए हर दंपत्ति ईश्वर से पुत्र प्राप्ति की कामना करता है। कई निःसंतान दंपत्ति भी पुत्र प्राप्ति के लिए धार्मिक उपाय अपनाते हैं। शास्त्रों में शिव महिम्न स्त्रोत के पाठ से पुत्र प्राप्ति का उपाय बताया गया है।

**पुत्र प्राप्ति का उपायः**

1. **सावन माह से शुरू करें:** यह उपाय विशेष तौर पर सावन माह से शुरू करें।
2. **सुबह जल्दी उठें:** स्त्री और पुरुष दोनों सुबह जल्दी उठें।
3. **उपवास:** स्त्री इस दिन उपवास रखे।
4. **पार्थिव लिंग का निमार्ण:** पति-पत्नी दोनों साथ मिलकर गेंहू के आटे से 11 पार्थिव लिंग बनाए। पार्थिव लिंग विशेष मिट्टी के बनाए जाते हैं।
5. **शिव महिम्न स्त्रोत का पाठ:** पार्थिव लिंग को बनाने के बाद इनका शिव महिम्न स्त्रोत के श्लोकों से पूजा और अभिषेक के 11 पाठ स्वयं करें।
6. **विद्वान ब्राह्मण की मदद:** यदि स्वयं करना संभव न हो, तो यह कर्म किसी विद्वान ब्राह्मण से कराएं। पार्थिव लिंग निर्माण और पूजा भी ब्राह्मण के बताए अनुसार कर सकते हैं।
7. **पवित्र जल का सेवन:** पार्थिव लिंग के अभिषेक का पवित्र जल पति-पत्नी दोनों पीएं और शिव से पुत्र पाने के लिए प्रार्थना करें।

यह प्रयोग 21 या 41 दिन तक पूरी श्रद्धा और भक्ति से करने पर शिव कृपा से पुत्र जन्म की कामना शीघ्र ही पूरी होती है। इस प्रकार सावन में शिव महिम्न स्त्रोत का पाठ और पार्थिव लिंग की पूजा, भगवान शिव की कृपा प्राप्त करने का प्रभावी उपाय है। शिव कृपा से संतान सुख की प्राप्ति अवश्य होती है।

# आधुनिक गुरु पूर्णिमा: 'डिजिटल गुरु' का प्रभाव और सोशल मीडिया पर श्रद्धा का नया रंग

गुरु पूर्णिमा हिन्दू धर्म में गुरु के प्रति सम्मान और आभार प्रकट करने का विशेष पर्व है। यह त्योहार आषाढ़ मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है और इसका महत्व भारतीय संस्कृति में अत्यधिक है। गुरु पूर्णिमा का दिन गुरु शिष्य परंपरा की गहराई को समझने और उसकी महत्ता को स्वीकार करने का अवसर प्रदान करता है।

इस दिन विशेष रूप से संतों, महात्माओं और शिक्षकों की पूजा की जाती है, जो जीवन के मार्गदर्शक और ज्ञान के स्रोत होते हैं। गुरु पूर्णिमा पर भक्तगण अपने गुरु के चरणों में श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और उनके उपदेशों को मानते हुए अपने जीवन को सुधारने का संकल्प लेते हैं। गुरु पूर्णिमा का धार्मिक महत्व इस बात में भी निहित है कि यह दिन वैदिक काल के महान गुरु, महर्षि वेदव्यास के जन्म दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। महर्षि वेदव्यास ने वेदों, उपनिषदों और पुराणों का संकलन किया, जो भारतीय धार्मिक और स-ंस्कृतिक जीवन की आधारशिला हैं। इस प्रकार, गुरु पूर्णिमा गुरु-शिष्य संबंधों की गहराई और गुरु के प्रति हमारी श्रद्धा को प्रकट करने का महत्वपूर्ण अवसर है।

**आधुनिक गुरु पूर्णिमा**

गुरु पूर्णिमा के अवसर पर जब हर कोई अपने गुरु के प्रति श्रद्धा प्रकट करने की कोशिश करता है, तो सोशल मीडिया पर एक नई क्रांति देखने को मिलती है। यहाँ पर 'गुरु' शब्द का अर्थ बदल चुका है। अब गुरु केवल धार्मिक या शैक्षणिक नहीं, बल्कि उन लोगों तक भी फैले हैं, जिन्होंने हमें "5 मिनट के टिप्स" या "जल्द अमीर बनने के उपाय" के वीडियो से प्रभावित किया है। सोशल मीडिया पर गुरु पूर्णिमा के दिन, लाखों लोग अपने 'फॉलोवर्स' को दिखाने के लिए अपने जीवन के 'गुरुओं' के साथ फोटो शेयर करते हैं। ऐसे में अगर आप किसी फिल्म स्टार, फिटनेस कोच या खुद को 'लाइफ कोच' मानने वाले व्यक्ति की पोस्ट को देखेंगे, तो आपके लिए यह जानना आसान होगा कि 'गुरु' का नया अवतार कैसा है। गुरु की पूजा अब 'लाइक' और 'शेयर' की आदतों में बदल गई है। 30 सेकंड के वीडियो में जीवन के सबसे बड़े रहस्यों की व्याख्या करने वाले 'गुरुओं' की कड़ी में, गुरु पूर्णिमा पर उनके भक्त सोशल मीडिया पर 'हैशटैग' के जरिए अपनी श्रद्धा दिखाते हैं। इस डिजिटल युग में गुरु पूर्णिमा का असली संदेश शायद कहीं खो गया है, लेकिन 'डिजिटल गुरु' की पूजा का यह नया चलन निश्चित ही हमें हंसने पर मजबूर करता है।

**डिजिटल श्रद्धा या वास्तविक सम्मान?**

गुरु पूर्णिमा का वास्तविक उद्देश्य गुरु-शिष्य संबंधों की गहराई और गुरु के प्रति श्रद्धा को प्रकट करना है। आजकल, सोशल मीडिया पर 'डिजिटल गुरु' की पूजा और 'लाइक' तथा 'शेयर' के माध्यम से श्रद्धा जताना एक नया चलन बन गया है। यह महत्वपूर्ण है कि हम 'वायरल' और 'इंफ्लुएंसर' के बजाय, अपने वास्तविक जीवन के गुरु के प्रति सम्मान और आभार व्यक्त करें। गुरु पूर्णिमा पर हम गुरु की शिक्षाओं को समझकर और उनके आदर्शों का पालन करके अपनी जिंदगी को सार्थक बना सकते हैं।

आधुनिक युग में गुरु पूर्णिमा का उत्सव एक ऐसा मौका है जब हम अपने सोशल मीडिया फीड पर गुरु के नाम से बहुत सारी सेल्फीज और पोस्ट्स देखते हैं, जिसमें हमारे अनुयायी फ्रेंड्स और फॉलोवर्स गुरुओं को 'लाइक' और 'शेयर' करके अपनी आदर्शता दिखाते हैं। यहां तक कि गुरु का नया अर्थ भी बदल चुका है अब गुरु वह होता है जो वायरल हो गया हो, न कि ज्ञान का स्रोत। गुरु पूर्णिमा का महत्व संसारी दृष्टिकोण से नया हो गया है। अब गुरु वह होता है जिसने आपको बताया कि कैसे अपने पोस्ट्स में मेम्स और एमोजिस सही समय पर इस्तेमाल करें, और जिसने आपको सिखाया कि कैसे अपने फोटोग्राफी स्किल्स को 'नेचुरल लुक' के नाम पर सुधारें। ये हैं आधुनिक युग के 'डिजिटल गुरु'। सोशल मीडिया पर गुरु पूर्णिमा का उत्सव जैसे-तैसे रंग में खुशी और ध्यान भरी पोस्ट्स से भरा होता है। लोग अपने 'फॉलोवर्स' के सामने अपने 'गुरुओं' की साधना करते हैं, जो उन्हें अपने लाइफ हैक्स से बाहर निकलने का रास्ता दिखाते हैं। इस उत्सव के दिन, 'डिजिटल गुरु' के आदर्शों को फॉलो करने के लिए लोग बबार्दी से तांते हैं, उनके ट्वीट्स को लाइक करते हैं, और उनके इंस्टाग्राम पोस्ट्स पर 'हार्ट' बारिश करते हैं। इस नये युग में, गुरु पूर्णिमा का उत्सव एक 'डिजिटल धार्मिकता' का प्रतीक बन गया है। धार्मिकता ने अब नए अंदाज में अपना स्वागत किया है वीडियो कंटेंट्स, मोटिवेशनल पोस्ट्स, और लाइफ हैक्स के जरिए। गुरु पूर्णिमा का आधुनिक उत्सव है, जो आपको सिखाता है कि कैसे 'वायरल' बनना है, और कैसे आप भी बन सकते हैं 'इंफ्लुएंसर'।

## IMPORTANT QUESTIONS FOR COMPETITIVE EXAMS

1. राजस्थान के किस शासक ने 'चित्तौड़गढ़' का किला बनवाया था?
   अ. महाराणा प्रताप ब. राणा सांगा
   स. चित्रांगद मौर्य द. राणा कुम्भा
2. हल्दीघाटी का युद्ध कब लड़ा गया था?
   अ. 1526 ब. 1556
   स. 1576 द. 1600
3. राजस्थान के किस शासक को 'राजा राठौड़' के नाम से जाना जाता है?
   अ. राव मालदेव ब. राव जोधा
   स. राव चूड़ा द. राव भीम सिंह
4. राजस्थान की राजधानी जयपुर का निर्माण किसने करवाया था?
   अ. महाराणा प्रताप ब. राणा सांगा
   स. सवाई जय सिंह द्वितीय द. राणा उदय सिंह
5. राजस्थान के पहले मुख्यमंत्री कौन थे?
   अ. मोहन लाल सुखाड़िया ब. हरिदेव जोशी
   स. जय नारायण व्यास द. हीरालाल शास्त्री
6. राजस्थान में पंचायती राज व्यवस्था कब लागू की गई थी?
   अ. 1952 ब. 1959
   स. 1965 द. 1970
7. राजस्थान का सबसे ऊंचा पर्वत कौन सा है?
   अ. माउंट आबू ब. अरावली पर्वत
   स. गुरु शिखर द. नाहरगढ़
8. राजस्थान की सबसे बड़ी झील कौन सी है?
   अ. पिचोला झील ब. सांभर झील
   स. जयसमंद झील द. फतेहसागर झील
9. राजस्थान में कौन सा मरुस्थल स्थित है?
   अ. थार मरुस्थल ब. गोबी मरुस्थल
   स. साहरा मरुस्थल द. अरावली मरुस्थल
10. राजस्थान की किस झील को कृत्रिम झील कहा जाता है?
    अ. पिचोला झील ब. सांभर झील
    स. जयसमंद झील द. फतेह सागर झील

**उत्तर तालिका** (1) स, (2) स, (3) ब, (4) स, (5) द, (6) ब, (7) स, (8) ब, (9) अ, (10) स।

ank-3_Copy of Layout 1 16/07/2024 1:59 PM Page 4

# सन शाइन स्कूल के बच्चों ने WSDP कार्यक्रम में दिखाया अद्भुत उत्साह

-स्वर्ण खबर नेटवर्क-

**टोंक।** शहर के प्रतिष्ठित सन शाइन स्कूल के कक्षा 5 से कक्षा 12 तक के बच्चों ने स्वर्ण खबर मीडिया नेटवर्क द्वारा शुरू किए गए "राइटिंग स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम" में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य बच्चों की लिखने और सोचने की क्षमता का विकास करना है, जिससे उनका सर्वांगीण विकास सुनिश्चित हो सके। कार्यक्रम के तहत विद्यार्थियों को "मोबाइल एक अभिशाप" शीर्षक दिया गया, जिस पर सभी स्कूल के सैकड़ों बच्चों अपने विचार लिखें। बच्चों ने न केवल बड़े उत्साह के साथ भाग लिया, बल्कि उन्होंने अपनी लेखनी से सभी को प्रभावित भी किया। इस कार्यक्रम को लेकर सन शाइन स्कूल की प्रधानाचार्या, कामिनी श्रीवास्तव ने कहा कि, "हरउद्ध जैसे कार्यक्रम बच्चों के बौद्धिक विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। यह कार्यक्रम न केवल उनके लिखने की क्षमता को निखारता है, बल्कि उनकी सोचने की शक्ति को भी मजबूती देता है। हमें गर्व है कि हमारे स्कूल के बच्चों ने इसमें शानदार प्रदर्शन किया है।" वहीं कुछ अभिभावकों का कहना है कि "स्वर्ण खबर और सन शाइन स्कूल का यह प्रयास विद्यार्थियों में लिखने और सोचने की क्षमता का विकास करेगा।" स्वर्ण खबर मीडिया नेटवर्क के प्रधान सम्पादक राजाराम गौत्तम ने कहा कि, "सभी विद्यार्थियों ने लेख को बेहतर लिखने का प्रयास किया है और यही प्रयास उनकी लेखन शैली को मजबूती प्रदान करेगा।"

**यातायात व्यवस्था में सुधर**

## ट्रैफिक पुलिस की सराहनीय पहल भारी वाहनों पर सख्ती से नो एंट्री

-स्वर्ण खबर नेटवर्क-

**टोंक।** शहर में यातायात व्यवस्था को सुधारने के उद्देश्य से पुलिस अधीक्षक संजीव नैन के निर्देशन में ट्रैफिक पुलिस द्वारा एक विशेष अभियान चलाया गया है। इस अभियान के तहत शहर में भारी वाहनों के निषेध को सख्ती से लागू करने के लिए चार-पाँच नाके लगाए गए हैं।

यातायात पुलिस द्वारा उठाए गए इस कदम का उद्देश्य शहर में यातायात नियमों का सख्ती से पालन कराना और यातायात को सुगम बनाना है। विशेष रूप से, भारी वाहनों की नो एंट्री का खास ध्यान रखा गया है ताकि शहर की सड़कों पर ट्रैफिक जाम और दुर्घटनाओं में कमी आ सके। शहरवासियों ने भी यातायात पुलिस की इस कार्यशैली की सराहना की है। लोगों का कहना है कि इन नाकों की वजह से अब यातायात में सुधार देखने को मिल रहा है और सड़कों पर आवागमन सुचारू रूप से हो रहा है। ट्रैफिक पुलिस ने भी अपनी तत्परता और कर्तव्यनिष्ठा से यह साबित कर दिया है कि वे शहर की सुरक्षा और सुव्यवस्था के प्रति पूरी तरह समर्पित हैं।

ट्रैफिक पुलिस की इस मुहिम से यह स्पष्ट है कि टोंक शहर में यातायात नियमों की सख्ती से पालन कराने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है।

## कॉलोनियों में नाली निर्माण कंप्लेंट की अनदेखी, बरसात में हुई समस्या

-स्वर्ण खबर नेटवर्क-

**टोंक।** जिले के हाईवे के आसपास स्थित कॉलोनियों में नगर परिषद की लापरवाही से नाली निर्माण न होने के कारण खाली प्लॉट्स में बारिश का पानी भर जाता है। यह समस्या लगभग दो महीने पहले टोंक जिला प्रशासन को अवगत करवाई गई थी, और चार महीने पहले ही राजस्थान संपर्क पोर्टल पर इसकी शिकायत दर्ज कराई गई थी। लेकिन, बरसात के मौसम के बावजूद प्रशासन की नींद नहीं खुल रही है। द्वारिका नगरी, ब्रज विहार, आनंद विहार, बजाज नगर सहित कई कॉलोनियों में पानी भर रहा है और कई मार्ग अवरुद्ध हो गए है। आपको बता दें कि हाइवे पर बने नालो की भी कोई निकासी नहीं है, जिससे हाइवे के नालों का पानी भी कॉलोनियों में भर जाता है। नगर परिषद को शिकायत करने पर जवाब आता है कि "खाली प्लॉट्स में पानी भरा रहता है तो उन प्लॉट वालों को कहो" लेकिन जब उन्हें पहले ही शिकायत कर दी गई थी पानी भरेगा, नाली बनवा दीजिए तो उस शिकायत पर नगरपरिषद अनदेखी जाहिर कर रही है।

क्षेत्रवासी इस संकट का समाधान चाहते हैं और प्रशासन से मांग कर रहे हैं कि शीघ्र ही इस मामले में ठोस कदम उठाया जाएं। बार-बार शिकायत करने के बावजूद समस्या का समाधान न होना दशार्ता है कि प्रशासन की ओर से कितनी लापरवाही बरती जा रही है। इस प्रकार, आम जनता प्रशासनिक कार्यशैली से निराश और असंतुष्ट है। उन्हें अपने जीवन को सरल और सुरक्षित बनाने के लिए प्रशासन की ओर से त्वरित और प्रभावी कार्रवाई की आवश्यकता है। अब यह देखना होगा कि क्या प्रशासन इस दिशा में कोई कदम उठाता है या फिर आमजन की परेशानियाँ इसी तरह बढ़ती रहेंगी।

**कावड़ यात्रा पोस्टर विमोचन**

## हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी वेलफेयर सोसायटी की पहल...

-स्वर्ण खबर नेटवर्क-

**टोंक।** हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी वेलफेयर सोसायटी ने भारतीय सनातन मंडल की कावड़ यात्रा के पोस्टर का विमोचन किया। इस अवसर पर सोसायटी के अध्यक्ष हनुमान शर्मा ने बताया कि 25 जुलाई को कावड़ यात्रा राधा किशन मंदिर से शुरू होकर मुख्य बाजार होते हुए भूतेश्वर महादेव मंदिर तक जाएगी। पोस्टर विमोचन समारोह में भारतीय सनातन मंडल के कार्तिक बम और कार्यक्रम संयोजक अशोक गांधी ने आयोजन की जानकारी दी।

इस मौके पर बाबूलाल शर्मा, अमिन, बद्रीलाल विजय, भागचन्द विजय, श्यामबाबू नामा, केदार मेहरवाल, राजकुमार शर्मा, रोहित सिंह राजावत, अतिश्य जैन, कुलदीप साहू, रामप्रसाद गुर्जर, आदित्य सिंघल, विजयलक्ष्मी शर्मा, मंजू गांधी, भारती विजय, प्रेमलता मेहरवाल, मंजू विजय, मधु गोयल, मिनू तिवाड़ी, और कमला नामा सहित कई लोग उपस्थित थे।

## बारिश में प्रशासन का जल निकासी प्रयास अब नाले साफ, लेकिन पहले सचेत रहते तो...

**टोंक।** रविवार को दो घंटे की मूसलाधार बारिश के बाद शहर में जलभराव की स्थिति उत्पन्न हुई, जिसे देखते हुए नगर परिषद आयुक्त ममता नागर ने निरीक्षण किया और जल निकासी के लिए निर्देश दिए। अतिक्रमण हटाने और मडपंप से पानी निकालने के आदेश जारी किए गए। यह ध्यान देने वाली बात है कि प्रशासन अब नालों की सफाई में जुटा है, लेकिन यदि पहले से ही सतर्कता बरती गई होती और नियमित सफाई की व्यवस्था की जाती, तो इतनी समस्याएँ उत्पन्न ही नहीं होतीं। लेकिन अब आमजन को भी प्रशासन के साथ मिलकर काम करने की जरूरत है ताकि भविष्य में ऐसी परिस्थितियाँ न बनें और सब मिलकर एक बेहतर व्यवस्था बना सकें।

**3 जुलाई को चले, 17 तक पहुंचेंगे खाटू धाम**

## मध्यप्रदेश से अकेले चलकर खाटू नरेश के दर्शन को निकले संतोष ठाकुर

धार्मिक यात्रा

-स्वर्ण खबर नेटवर्क-

**टोंक।** मध्यप्रदेश के संतोष ठाकुर ने खाटू नरेश के दर्शनों के लिए एक अद्वितीय यात्रा पर निकले हैं। 3 जुलाई को अपनी यात्रा शुरू करने वाले संतोष प्रतिदिन 50 किमी पैदल चलकर 12 दिन में टोंक जिले की सीमा में पहुंचे हैं। उनका कहना है कि 750 किमी का यह सफर 17 जुलाई तक पूरा हो जाएगा। यात्रा के दौरान उनका स्वागत श्याम दुपट्टा ओढ़ाकर किया गया और नाश्ता कराया गया। संतोष ने कहा कि आज का युवा अगर धार्मिक कार्यों में अपनी रुचि दिखाए तो नशे जैसी बुराइयों से दूर रह सकता है।

## कलेक्ट्रेट परिसर में वृक्षारोपण, सुरक्षा और देखभाल की शपथ

-स्वर्ण खबर नेटवर्क-

**टोंक।** मुख्यमंत्री वृक्षारोपण महाअभियान 2024 के अंतर्गत सोमवार को कलेक्ट्रेट परिसर में पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस मौके पर उपखंड अधिकारी राहुल सैनी, नगर परिषद आयुक्त ममता नागर, सूचना एवं विज्ञान अधिकारी रमेश चंद जैन, और एडीईओ सुशील कुमार अग्रवाल ने मिलकर पौधे लगाए। कार्यक्रम में सभी कर्मचारियों ने नगर परिषद की कनिष्ठ तकनीकी सहायक श्रीयंका के सहयोग से पौधों की सुरक्षा और देखभाल की शपथ ली। यह पहल पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जिससे सभी ने अपने योगदान को सुनिश्चित किया।

## यूनानी कॉलेज में डॉ.नाजिया ने पर्यावरण संरक्षण का दिया संदेश

-स्वर्ण खबर नेटवर्क-

**टोंक।** मुख्यमंत्री वृक्षारोपण महाअभियान 2024 के अंतर्गत, यूनानी कॉलेज की उप प्राचार्य डॉ. नाजिया शमशाद ने कॉलेज परिसर में विभिन्न पौधे लगाए, जिनमें जामुन, नीम, गुलमोहर, और पीपल शामिल हैं। डॉ. नाजिया ने पौधों की प्रगति की जानकारी ली और चिकित्सकों को लक्ष्य पूरा करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि पेड़ प्राकृतिक संतुलन और आर्थिक योगदान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। चिकित्सकों को पौधों की देखभाल में नियमित रूप से पानी देने की सलाह दी। इस अवसर पर डॉ. फातिमा अंजुम, डॉ. सुरैया सिद्दीकी, और पैरामेडिकल स्टाफ ने भी भागीदारी निभाई।

**हरित राजस्थान**

## हकीकत या हसीन सपना ?

**राजस्थान,** भारत का वह राज्य जो अपने सुनहरे रेत के धोरों और गरम हवाओं के लिए प्रसिद्ध है, अब हरियाली का सपना देख रहा है। जब से "हरित राजस्थान" अभियान का शंखनाद हुआ है, तब से लोग इस बात पर बहस कर रहे हैं कि यह सपना सच में पूरा होगा या सिर्फ एक सरकारी विज्ञापन ही रहेगा। आइए, इस पर विचार करते हैं। राजस्थान के बारे में सोचते ही हमारे दिमाग में ऊंटों की तस्वीरें, रेत के धोरें और सूखे पेड़ आते हैं। ऐसे में हरित राजस्थान की कल्पना करना वैसा ही है जैसे किसी ऊंट को पानी में तैरते देखना।

पीयूष गौत्तम
कार्यकारी सम्पादक
स्वर्ण खबर मीडिया नेटवर्क

लेकिन सरकारी बाबूओं का कहना है कि यह संभव है। वे कहते हैं कि हमने तो योजना बना ली है, बस जनता का साथ चाहिए। अब भला जनता भी सोच रही है कि योजना बनाने से क्या होगा, जब तक जमीन पर हरियाली ना दिखे। हमारे देश में योजनाओं की लंबी कतार है। हर पांच साल में एक नई योजना आती है और पुरानी योजनाएँ सरकारी फाइलों में दब जाती हैं।

हरित राजस्थान की योजना भी कहीं उन्हीं फाइलों में ना दब जाए, इसका डर जनता को हमेशा सताता है। लेकिन फिर भी उम्मीद पर दुनिया कायम है, और हम भी यह मानते हैं कि शायद इस बार कुछ अलग हो। हरित राजस्थान का सबसे बड़ा हिस्सा वृक्षारोपण है। सरकार ने बताया है कि करोड़ों पेड़ लगाए जाएंगे। अब यह पेड़ लगाए जाएंगे या बस कागजों में गिने जाएंगे, यह तो समय ही बताएगा।

पिछले साल जब वृक्षारोपण का अभियान चला, तब सरकारी बाबूओं ने पौधों की गिनती करते हुए सेल्फी ली और सोशल मीडिया पर पोस्ट कर दी। जनता भी देखती रह गई कि क्या यह अभियान था या कोई उत्सव। राजस्थान में जल संरक्षण की बातें भी बहुत होती हैं। तालाबों की खुदाई, चेक डैम्स का निर्माण, वर्षा जल संग्रहण की योजनाएं सब कुछ बहुत अच्छा लगता है सुनने में। लेकिन जब बारिश होती है, तब सारा पानी बहकर चला जाता है और हम बस देखते रह जाते हैं। हरित राजस्थान की सफलता का सबसे बड़ा हिस्सा जल संरक्षण पर निर्भर करता है। राजस्थान की तपती धूप सोलर पावर के लिए वरदान साबित हो सकती है। सरकार ने यह भी घोषणा की है कि सोलर पावर का अधिकतम उपयोग किया जाएगा। लेकिन देखना यह होगा कि यह योजना कितनी धरातल पर उतर पाती है और कितनी कागजों में रह जाती है। हरित राजस्थान की सबसे बड़ी चुनौती जनता की भागीदारी है। जब तक लोग खुद नहीं जागरूक होंगे और सक्रियता से भाग नहीं लेंगे, तब तक यह योजना सफल नहीं हो सकती। इसके लिए सरकारी प्रयासों के साथ-साथ आम जनता को भी आगे आना होगा और इस अभियान को अपना बनाना होगा।

हरित राजस्थान एक अद्भुत और सकारात्मक पहल है। यदि यह योजना सफल होती है, तो राजस्थान का भविष्य निश्चित रूप से हरित होगा। लेकिन इसके लिए आवश्यक है कि सरकारी अधिकारी और जनता मिलकर काम करें और यह सुनिश्चित करें कि योजनाएं केवल कागजों में ही न रह जाएं। हँसी-मजाक और व्यंग्य के साथ-साथ यह भी समझना आवश्यक है कि यह पहल हमारे आने वाले पीढ़ियों के लिए कितनी महत्वपूर्ण है। तो आइए, मिलकर काम करें और राजस्थान को हरित बनाने का सपना सच करें।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक: राजाराम गौतम के लिए जैन आफसेट, राज टाकीज रोड़, टोंक से मुद्रित व कार्यालय श्रीस्वर्णदुर्गा कैलाशपति मन्दिर, द्वारिका नगरी बाईपास, कोटा रोड़, टोंक से प्रकाशित। प्रधान सम्पादक: राजाराम गौतम। फोन: 9928450637,9462549799 सह सम्पादक: मोतीशंकर तिवाड़ी व कार्यकारी सम्पादक: भगवान नारायण गौतम। ई-मेल: swarnkhabar@gmail.com पीआरबी एक्ट के तहत समाचारों के लिए जिम्मेदार ।